कि सारे झूठे खुदाओं का इंकार किया जाए। कुरआन इस बात को भी खारिज करता है कि अल्लाह के सिवा किसी में भी किसी प्रकार के दिव्य गुणों से माना जाए।

पिछले लोगों की घटनाओं का सच्चा ज्ञान

कुरआन में कई ऐसी सच्ची कहानियों का वर्णन है जिससे लाभदायक सबक हासिल होता है, जिनमें पिछले पैगम्बरों की सच्ची कहानियाँ भी हैं जैसे, आदम, नूह, इब्राहीम, ईसा तथा मूसा (अ०स०)। अल्लाह कुरआन में कहता है,

"इन की कहानियों में बुद्धि वालों के लिए शिक्षा-सामग्री है।" (१२:१११)

हमें कयामत के दिन का स्मरण कराने के लिए

यह पवित्र किताब हमें याद दिलाती है कि हर किसी को मरना है और वह अपने हर कथनी एवं करनी का हिसाब-किताब भी ज़रूर देगा: **"और हम कयामत के दिन उनके बीच ठीक-ठाक तौल की तराजू ला रखेंगे, फिर किसी पर किसी तरह का ज़ुल्म न किया जायेगा,"**(२१:४७)

ज़िन्दगी जीने का सही रास्ता बताने के लिए

कुरआन मुख्यत: जीवन के असल मकसद को उजागर करता है अर्थात सिर्फ अल्लाह ही की इबादत करना, और जीवन को उस तरह गुज़ारना जिस तरह का आदेश उस रब ने दिया है।

इस्लाम में इबादत एक व्यापक शब्द है जिसमें हर तरह की कथनी एवं करनी शामिल है (चाहे नीजी हो या सार्वजनिक) जिसे अल्लाह चाहता हो या जिससे खुश होता हो। इसलिए अल्लाह के आदेशों को मानकर एक मुस्लिम अपने रब की इबादत भी करता है और अपने जीवन के मकसद को भी प्राप्त कर लेता है। निम्नलिखित कुरआन द्वारा बताए गए इबादत के कुछ उदाहरण हैं:

नमाज़:

"हे ईमान लाने वालो! (अल्लाह के आगे) झुको और सजदा करो, और अपने रब की इबादत करो, और नेक काम करो ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।" (२२:७७)

दान:

"और (अल्लाह के रास्ते में) दान करते रहो जो तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो लोग अपने मन के लालच से सुरिक्षत रखे गये वही कामयाब है।" (६४:१६)

ईमानदारी:

"और सत्य को असत्य के साथ मिलावट मत करो और न सच को छुपाओ, तुम्हें तो खुद इसका ज्ञान है।" (२:४२)

विनम्रता:

"मुसलमान मर्दों से कहो कि अपनी निगाह नीची रखें (...) और मुसलमान औरतों से कहो कि वे भी अपनी निगाह नीची रखें।" (२४:३०-३१)

कृतज्ञता:

"और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट से निकाला है कि उस वक्त तुम कुछ भी नहीं जानते थे, उसी ने तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाये कि तुम शुक्रिया अदा कर सको।" (१६:७८)

इंसाफ:

"हे ईमानवालो! इंसाफ पर मज़बूत रहने वाले और अल्लाह के लिए सच गवाही देने वाले बन जाओ, चाहे वह खुद तुम्हारे अपने और माँ-बाप और रिश्तेदारों के खिलाफ हो, अगर वह इंसान धनी हो तो या गरीब हो तो..." (४:१३५)

धैर्य:

"और सब्र (धैर्य) करो कि निस्संदेह अल्लाह उत्तमकारों का बदला अकारथ नहीं करता।" (११:११५)

अच्छे कर्म:

"जो लोग ईमान (विश्वास) लाये और अनुकूल कर्म किये उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए क्षमा और बड़ा कर्म-फल है।"(५:९)

निष्कर्ष

इन सब का सार यह है कि पवित्र कुरआन इंसानों को सिर्फ एक सच्चे खुदा की बंदगी करने का आदेश देता है और जीवन के हर मोड़ पर मार्गदर्शन करता है ताकि हम इस जीवन और मरने के बाद के जीवन में कामयाब हो सकें।

"(हे नबी!) हमने तुम पर यह किताब लोगों के लिए हक के साथ उतारी है। अब जो (सीधा) मार्ग ग्रहण करेगा अपने लिए करेगा, और जो भटकेगा, उसके भटकने का बवाल उसी पर होगा। तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं हो।" (३९:४१)

क्या आप खुद इस महान किताब को पढ़ना नहीं चाहेंगे? अपनी भाषा में कुरआन कि प्रति मुफ्त प्राप्त करने के लिए संपर्क करें:

+91-9920955597 / 9920370659

albirr.foundation@gmail.com | www.albirr.in

एक संदेश मानवता के लिए

इस्लाम का ज्ञान

शृंखला : ४

al-birr foundation

कुरआन क्या है ?

खुदा के शब्द

कुरआन अल्लाह के वह शब्द हैं जिन्हें उसने अपने फरिश्ते जिबराइल द्वारा अंतिम पैगम्बर मुहम्मद पर अवतरित किया।

"इस किताब का अवतरण अल्लाह की ओर से है, जो प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है।" (३९:१)

इंसानो के लिए मार्गदर्शन

पवित्र कुरआन "उतारा गया लोगों के लिए मार्गदर्शन ...... और सत्य-असत्य के अन्तर के स्पष्ट प्रमाणों के साथ।" (२:१८५)

यह इंसानो को एक ऐसी दिशा दिखाता है जिसके द्वारा वे सही और गलत में फर्क कर सकें, क्योंकि इसके बिना तो निश्चय ही मनुष्य नुकसान उठाने वालो में से हो जायेगा।

अंतिम ईशवाणी

कुरआन उस मालिक द्वारा अवतरित अंतिम संदेश है जो उन साच्चाईयों की पुष्टी करता है जो पहले अवतरित किताबों में बाकी बची हैं तथा उन गलत एवं गढ़ी हुई बातों का विरोध करते हुए सुधार करता है जो आज उन किताबों में है।

"हे वे लोग जिन्हें किताब दी गई। उस चीज़ पर जिसे हमने उतारा (पवित्र कुरआन) है और जो उस चिज़ की पुष्टी करती है जो स्वयं तुम्हारे पास है, ईमान लाओ..." (४:४७)

कुरआन कैसे अवतरित हुआ ?

पवित्र कुरआन पैगंबर महम्मद (स०) पर अवतरित हुआ और आज तक उसी भाषा में संरक्षित है; अर्थात अरबी में। हालांकि कुरआन के अनुवाद कई भाषाओं में उपलब्ध है।

कुरआन एक ही बार में एक पुस्तक के रूप में अवतरित नहीं हुआ, बल्कि २३ वर्षों के लंबे अंतराल में पुरा कुरआन अवतरित हुआ है।

यही कारण है कि इस बात का जानना ज़रूरी है कि आयतें किन परिस्थितियों में अवतरित हुई हैं; अन्यथा इसकी शिक्षाओं को गलत ढंग से समझा जा सकता है।

मुझे कैसे जानकारी हो कि यह ईश्वर की ओर से है ?

संरक्षण

कुरआन एक मात्र धार्मिक किताब है जो कई सदियों से संचलन में है, और आज भी उसी शुद्ध रूप में स्थापित है जिसमें यह अवतरित हुआ था। पिछले १४०० वर्षों में आज तक इसमें न कोई चीज़ बढ़ाई गई न घटाई गई और न ही कोई परिवर्तन हुआ।

"बेशक हम ने ही इस कुरआन को उतारा है और हम ही इसके रक्षक हैं" (१५:९)

कुरआन न सिर्फ लिखित रूप में बल्कि कई मर्दों, बच्चों तथा औरतों के सीने में भी संरिक्षत है। आज, लाखों लोगों को कुरआन शुरु से अंतिम तक कंठस्थ (याद) है।

वैज्ञानिक चमत्कार

कुर्आन की कोई भी आयत आधुनिक विज्ञान के विरुद्ध नहीं है बल्कि कई आयतें इसके अनुरूप हैं। कुरआन की एक विशिष्ट खूबी यह है कि इसकी कई आयतें विभिन्न क्षेत्रों के प्राकृतिक घटनाओं का बिल्कुल सही वर्णन करती है, जैसे भ्रूणविज्ञान, मौसम विज्ञान, खगोलविज्ञान, भूविज्ञान तथा समुद्र विज्ञान आदि। वैज्ञानिकों को इस सातवीं शताब्दी ई० की पुस्तक में ऐसे कई तथ्य मिले हैं जो आधुनिक विज्ञान के अनुसार एकदम सही हैं।

"जल्द ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ दुनिया के किनारों में भी दिखायेंगे और खुद उनके अपने अस्तित्व में भी, यहाँ तक कि उन पर खुल जाए कि सत्य यही है।"(४१:५३)

वास्तव में कुरआन के कई वैज्ञानिक चमत्कार तो ऐसे हैं जिन्हें बिल्कुल अभी और काफी आधुनिक उन्नति एवं तकनीकी उपकरणों द्वारा खोजा गया है। उदाहरण के तौर पर;

- पवित्र कुरआन मानव भ्रूण के विकास की विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। खुद वैज्ञानिक क्षेत्र में इस की जानकारी बिल्कुल ही हाल में हो पाई है।
- पवित्र कुरआन कहता है कि खगोलिय पिंड (तारे, ग्रह, उपग्रह आदि...) धूल के बादलों से बने हैं। पहले यह एक अज्ञात बात थी, परंतु अब यह ब्रम्हाण्ड विज्ञान का एक निर्विवाद सिद्धांत बन चुका है।
- आधुनिक विज्ञान ने उन समंदरी बाधाओं को भी खोजा है जिससे दो समुद्र आपस में मिलते तो हैं फिर भी अपने-अपने तापमान, घनत्व तथा खारेपन को बनाए रखते हैं। अल्लाह की इन निशानियों को पवित्र कुरआन में आज से १४०० वर्ष पहले ही वर्णित कर दिया गया था।

विशिष्टता

कुरआन को अवतरित हुए १४ सदियों से अधिक बीत चुका परंतु आज तक कोई भी कुरआन की तरह का एक पाठ भी ऐसा नहीं बना पाया जिसमें कुरआन की तरह सौम्यता, वाग्मिता, वैभव, बुद्धिमत्ता, भविष्यवाणी और दूसरी उत्तम विशेषताएँ हों।

"यदि तुम उस चीज़ के बारे में जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है (अर्थातः कुरआन) संदेह में हो, तो तुम उस जैसी एक सूरह (बना) लाओ, और अल्लाह के सिवा जो तुम्हारी सहायता करने वाले हो उनको भी बुला लो यदि तु, सच्चे हो।" (२:२३)

जिन लोगों ने पैगम्बर मुहम्मद (स०) का इंकार किया था वे भी कुरआन की इस चुनौती को पूरा करने में पूरी तरह नाकाम रहे, हालांकि वे अरबी भाषा में अत्यंत भाषणपटु थे। और यह आज दिन तक जूँ की तूँ बनी हुई है।

कोई विरोधाभास नहीं

जब भी कोई इंसान कुछ लिखता है तो ज़रूरी है कि उससे लिखने में या व्याकरण में कोई न कोई गलती ज़रूर हो, या फिर उसमें विपरीत बयान, गलत तथ्य, जानकारी की चूक जैसी दूसरी गलतियाँ भी होती हैं।

"क्या यह लोग कुरआन पर विचार नहीं करते ? अगर यह अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे की तरफ से होता तो बेशक इस में बहुत विभेद पाते।" (४:८२)

कुरआन में किसी प्रकार का कोई विरोधाभास नहीं है; फिर चाहे वह जल-चक्र, भ्रूणविज्ञान, भूविज्ञान और ब्रम्हाण्ड के बारे में वैज्ञानिक व्याख्या हो; एतिहासिक तथ्य और घटनाएँ हों या भविष्यवाणियाँ हों।

कहीं मुहम्मद (स०) ने तो इसे नहीं लिखा ?

यह ऐतीहासिक सत्य है कि पैगम्बर मुहम्मद (स०) अनपढ़ थे; न तो वे पढ़ सकते थे न ही लिख सकते थे। वे किसी भी क्षेत्र में शिक्षित नहीं थे जिससे कि कुरआन जैसी शानदार किताब की साहित्यिक सुंदरता या उसकी वैज्ञानिक या ऐतिहासिक यथार्थता में मुहम्मद (स०) का हाथ माना जा सकता। कुरआन में वर्णित ऐतिहासिक सटीकता जिसमें पिछले लोगों तथा सभ्यताओं का उल्लेख है इतनी महान हैं कि इसका किसी मनुष्य द्वारा लिखा जाना तकरीबन असंभव है।

"और यह कुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवाय (खुद ही) गढ़ लिया गया हो," (१०:३७)

एक सच्चे खुदा को मानना

कुरआन अवतरित करने का उद्देश्य

"और तुम सब का पूज्य एक अल्लाह ही है उस के सिवाय कोई सच्चा पूज्य नहीं, वह बहुत कृपालु और बड़ा दयालु है।" (२:१६३)

सारे कुरआन का सबसे महत्त्वपूर्ण विषय यही है कि एक सच्चे खुदा पर विश्वास रखा जाए। अल्लाह हम से कहता है कि उसका कोई साझी नहीं, न कोई बेटा है, न कोई उसके बराबर और न ही कोई उसके सिवा इबादत के योग्य है।

किसी की तुलना उससे नहीं की जा सकती और सृष्टी में से कोई उसके जैसा नहीं है। कुरआन इस बात का भी विरोध करता है कि अल्लाह के लिए मानवीय गुणों या कमीयों का हवाला दिया जाए।

सारे झूठे खुदाओं का इंकार किया जाए

"और अल्लाह की इबादत करो। और किसी को उसका साझी न ठहराओ।" (४:३६)

क्योंकि अल्लाह अकेला ही इबादत के योग्य है, तो यह भी ज़रूरी है